प्रेस विज्ञप्ति

स्ट्रोक (पक्षाघात) एक अत्यन्त सामान्य बीमारी है। अगर पूरे विश्व स्तर पर आकलन करे, तो हर 40 सेकेण्ड के अन्तराल में किसी न किसी को पक्षाघात हो रहा है एवं हर 4 मिनट में कोई न कोई व्यक्ति स्ट्रोक के कारण अपनी जान गवा रहे हैं। भारत वर्ष में पक्षाघात मृत्यु का दूसरा सबसे बड़ा कारण है। डा0 आर0के0 गर्ग बताते है अमेरिका जैसे विकसित देशो में स्ट्रोक के रिस्क कारको को नियन्त्रित करके इस बिमारी को पाँचवे नम्बर पर ला खड़ा कर दिया है।

इसके प्रमुख रिस्क कारणों में उच्च रक्ताचाप, डायबिटीज, धूमपान, शराब का अत्याधिक सेवन, वसीय पदार्थों को अत्याधिक सेवन, ह्रदय रोग, जीवन शैली में व्यायम की कमी एवं प्रतिदिन खान पान में हरी सब्जियाँ और फलों के सेवन की कमी का होना है। डा0 राजेश वर्मा बताते है कि रिस्क कारणो पर ध्यान देने से स्ट्रोक को निशचित तौर पर कम किया जा सकता है।

हमारे देश में पक्षाघात एक महामारी का रूप लेता जा रहा है। हमारे समाज में डायबिटीज एवं हाई ब्लड प्रेशर तेजी से बढ़ रहा है और इन माप दंडों में भारत वर्ष विश्व की अग्रणी देशों में से एक है।

डॉ0 राजेश वर्मा (प्रोफेसर न्यूरोलॉजी) बताते हैं कि विश्व स्ट्रोक संगठन ने विकासशील देशों के लिए पक्षाघात के बचाव के सम्बन्ध में अभियान छेड़ रखा है। विश्व स्ट्रोक संगठन ने जन जागरण अभियान के तहत पक्षाघात दिवस (29 अक्टूबर, 2016) को, सम्पूर्ण विश्व के समाज को बताया है कि स्ट्रोक एक इलाज योग्य बीमारी है इसके इलाज के लिए समाज की जागरूकता, इलाज की सुविधा एवं त्वरित इलाज के लिए संबोधित किया गया।

हर व्यक्ति को स्ट्रोक के प्रमुख लक्षणों को समझने की आवश्यकता है। अगर शरीर के एक तरफ अचानक मुंह, हाथ, पैर में कमजोरी या सुन हो जाना, अचानक दिमाग की चेतना को खोना, बोलने की दिक्कत या दूसरे की भाषा को समझने में परेशानी, अचानक आँखों की रौशनी में कमी होना, चलने की दिक्कत, चक्कर आना या संतुलन खोना इत्यादि प्रमुख है।

डा0 नीरज कुमार प्रोफेसर न्यूरोलाजी ने अपने व्यखान में बताया कि स्ट्रोक का त्वरित इलाज की सुविधा किंग जार्ज मेडिकज विश्वविद्यालय के सम्बन्ध इमरजेन्सी विभाग में उपलब्ध है।

क्योंकि स्ट्रोक के इलाज के लिये मरीज़ो को स्ट्रोक होने के तीन घंटे के अन्दर अस्पताल पहुंचने कि आवश्यकता है। सट्रोक मरीज़ा को अपने लक्षण अतीशीघ्र समझने कि आवश्यकता है। ऐसा इसलिये कि स्ट्रोक के इलाज में rtpa नाम कि दवा दी जाती है जो स्ट्रोक होने के उपरान्त 4.5 घंटे में ही सम्भव है। हमारे स्ट्रोक के मरीज़ अस्पताल में तीन घंटे के अन्दर पहुंच सके इसके लिये न्यूरोलाजी विभाग का स्ट्रोक हेल्पलाइन(8887147300) उपलब्ध है।

आप को अव्गत कराने है कि रेडियोलाजी उपकरणों द्वारा खून की नलिकाओं से थक्के को निकाला जा सकता है एवं रेडियोलाजिस्ट Acute Stroke Care में अपनी विशिष्ट भूमिका अदा कर सकते हैं।

डा0श्वेता पाण्डेय ने अव्गत कराया है कि स्ट्रोक होने के पश्चात अगर जान बच भी जाये तो भी विभिन्न प्रकार की मेडिकल जटिलतायें हो सकती है जिससे जीवन यापन मुश्किल हो जाता है।

स्ट्रोक के बाद होने वाली जटिलतायें में यादाश्त की कमी, विशाद, भाषा समझने में या बोलने में परेशानी, मांसपेशियों का जकड़ना, हड्डीयों का फ्रैक्चर एवं लकवा ग्रस्त होना प्रमुख तौर पर पाये जाते हैं।

डॉ0 राजेश वर्मा ने स्ट्रोक के बाद होने वाली यादाश्त की कमी एवं अन्य दिमाग की परेशानियों पर शोध किया है जो विश्व के अतिविशिष्ट जनरल (Journal of Neurological Sciences) में प्रकाशित हुआ।

यह अध्ययन 102 स्ट्रोक मरीजों पर हुआ जिससे 46 मरीजों (45.1%) में यादाश्त एवं अन्य दिमाग की परेशानियाँ पाई गई।

इस अध्ययन में साक्षकर्ता में कमी, दिमाग के विशिष्ट क्षेत्रों का नष्ट होना एवं बड़ा पक्षाघात पाया गया।

विशिष्ट बिन्दु

- स्ट्रोक एक बहुत सामान्य जानलेवा एवं विकलांगता वाली बीमारी है।
- स्ट्रोक के रिस्क कारणों को नियंत्रण में रख कर इस बीमारी से बचा जा सकता है।
- स्ट्रोक के मरीजो को त्वरित इलाज की जरूरत होता है। इसिलिए स्ट्रोक को ब्रेन अटैक भी कहा जाता है।
- स्ट्रोक को इलाज थक्का गलाने की दवा एवं उपकरण के मदद से थक्का निकाला जाना संभव है। यदि मरीज 6 घंटे के अन्दर विशेषज्ञों के इलाज में पहुंच जाता है।
- स्ट्रोक हेल्पलाइन (8887147300) मरीज़ो के त्वरित इलाज के लिये उपलब्ध है।